P-1

Rohtas Mahila College, Sasaram, 11-05-20, MON
Dr. Anan Murmu, Dept of psychology, B.A part II pr III
2019-20

'Topic'

(माध्य के गुण एवं दोष - Merits and Demerits of mean)

उत्तर: माध्य के निम्नलिखित गुण हैं -

(i) माध्य से किसी समूह या वितरण के औसत (Average) का बोध होता है। इससे समूह या वितरण के मापदण्ड का संकेत मिलता है।

(ii) माध्य से किसी समूह या ~~वितरण~~ वितरण के संतुलन का भी संकेत मिलता है। जब किसी समूह या वितरण के माध्य, माध्यिका तथा बहुलक में थोड़ा अंतर होता है तो इससे पता चलता है कि वह समूह या वितरण अधिक संतुलित है। लेकिन इन तीन मापों में अन्तर जितना ही अधिक होता है उस समूह या वितरण के उतना ही अधिक असंतुलित होने का संकेत मिलता है। जब तीनों के बीच अन्तर शून्य होता है तो वह वितरण बिल्कुल संतुलित या सुडौल होता है।

(iii) माध्य का एक गुण यह भी है कि इसके आधार पर दो या अधिक समूहों या वितरणों का तुलनात्मक अध्ययन करना संभव होता है। किसी वर्ग के सभी लड़कों और लड़कियों के प्राप्तांकों के माध्य अलग अलग निकाले जाए तो इससे पता चलता है कि उपलब्धि के दृष्टिकोण से लड़कियां तथा लड़कों में श्रेष्ठ कौन है।

(iv) माध्य के ऐसे कई गुण हैं जो सांख्यिकी (Statistics) को निकालने के सम्बन्ध में देखी जाती है। जैसे- मानक विचलन (SD) औसत विचलन (AD) t (t-test) सहसम्बन्ध आदि के परिकलन में माध्य सहायक है।

(v) गैरेट (Garrett) के अनुसार- केन्द्रीय प्रवृत्ति की तीनों मापों अर्थात माध्य, माध्यिका, तथा बहुलक में माध्य में सबसे अधिक स्थिरता पायी जाती है। अतः जहाँ कहीं केन्द्रीय प्रवृत्ति की स्थिर माप की आवश्यकता होती है वहाँ माध्य का व्यवहार करना अधिक उपयोगी होता है।

माध्य के निम्नलिखित दोष हैं -

(i) इसका सबसे गम्भीर दोष यह है कि अन्त के निरीक्षणों का

गहरा प्रभाव माध्य पर पड़ता है

(ii) माध्य का निर्धारण न तो निरीक्षण से संभव है और न बिन्दुरेखीय विधि (Graphic method) से ही संभव है।

(iii) ऐसी गुणात्मक क्रियाएँ जिनका मात्रात्मक मापन संभव नहीं हो पाता है। उनका अध्ययन माध्य से नहीं हो पाता है, जबकि माध्यिका से संभव संभव हो जाता है। जैसे - ईमानदारी, सुन्दरता आदि का अध्ययन।

(iv) यदि किसी श्रृंखला का एक निरीक्षण या प्राप्तांक लापता हो या खोया हो या अस्पष्ट हो तो उस श्रृंखला का माध्य निकालना संभव नहीं होगा है। उस निरीक्षण या प्राप्तांक को छोड़कर शेष का माध्य निकाला जा सकता है।

(v) माध्य के साथ एक कठिनाई यह है कि यदि आँकड़ों (Data) की पूरी जानकारी न हो तो उसके माध्य से अलत गलत निष्कर्ष प्राप्त हो सकता है। जैसे - मान लो कि मोहन ने पहली जाँच परीक्षा में 50, दूसरी में 55 और तीसरी में 60 अंक प्राप्त किए। सोहन ने इन परीक्षाओं में क्रमशः 60, 55, तथा 50 अंक प्राप्त किए। अन्त में दोनों ने औसत अंक 55 पाया। इस आधार पर निष्कर्ष निकला कि मोहन तथा सोहन की उपलब्धियाँ समान रहीं। लेकिन यह निष्कर्ष गलत है, क्योंकि मोहन की क्रमशः उन्नति हुई है जबकि सोहन की अवनति हुई है।

— x —

Scanned with CamScanner